राजकोट मंडल

भौगोलिक क्षेत्र

राजकोट मंडल में 596.67 किमी ब्राडगेज है। यह गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में रेल सेवाओं का संचालन करता है। यह वीरमगाम से ओखा तक तथा वांकानेर से मलिया मियाणा-नवलखी तक फैला है । इसका क्षेत्राधिकार ओखा से वीरमगाम , वांकानेर-नवलखी, दहिसरा-मलिया , राजकोट-भक्तिनगर तक है । दिनांक 01.04.2003 से अहमदाबाद मंडल के गठन के उपरान्त राजकोट का मेहसाना क्षेत्र इसमें सम्मिलित हो गया ।

सुविधा पाने वाले क्षेत्र

राजकोट मंडल सुरेन्द्रनगर, राजकोट, मोरबी, जामनगर तथा द्वारका जिलो में अपनी सुविधाएं प्रदान करता है ।

राजकोट मंडल का इतिहास

राजकोट मंडल का इतिहास सन 1879 ई. से शुरू होता है जब बांबे-बरोडा तथा सेंट्रल इंडिया रेलवे ने वढ़वाण जो अब सुरेन्द्रनगर नाम से तथा पहले काठियावाड़ के प्रवेश द्वारा के रूप में जाना जाता था , तक ब्राडगेज सेक्शन बढ़ाना शुरू किया था।

सन 1948 ई. में काठियावाड़ के राज्यों के एकीकरण के फलस्वरूप , इस क्षेत्र की सभी रेलों को सौराष्ट्र राज्य के अधीन एक यूनिट में विलय किया गया तथा इसे सौराष्ट्र रेलवे के नाम से जाना जाने लगा । दिनांक 1.4.1950 को हुए संघीय वित्तीय एकीकरण के फलस्वरूप रेलवे तंत्र भारत सरकार के अधीन हुआ तथा दिनांक 5.11.1951 की पश्चिम रेलवे अस्तित्व में आया । प्रारंभ में समूचे सौराष्ट्र का रेल तंत्र गोंडल क्षेत्र के अधीन था जिसके जामनगर , जूनागढ़, तथा भावनगर जैसे तीन जिलो में मुख्यालय थे । मंडलों का निर्माण हो जाने से दिनांक1.8.1956 को दो मंडलो का गठन हुआ जिनके मुख्यालय राजकोट तथा भावनगर थे ।

यातायात के लिए राजकोट-जामनगर सेक्शन सन 1897 में , सुरेन्द्रनगर-राजकोट सेक्शन सन 1905 में तथा जामनगर-खंभालिया-गोरिंजा-ओखा सेक्शन सन 1922 में खोल दिया गया । सुरेन्द्रनगर-वीरमगाम सेक्शन को सन 1902 में मीटर गेज में परिवर्तित कर दिया गया ।

वीरमगाम-हापा सेक्शन को दि.17.6.1980 को तथा हापा-ओखा सेक्शन को दि.24.4.1984 को ब्राडगेज में परिवर्तित कर दिया गया । वांकानेर-नवलखी-मालिया मियाणा सेक्शन का गेज परिवर्तन दि.21.2.2002 को पूरा कर लिया गया।